

मानव जीवन का मुख्य उद्देश्य

परमानन्द रजक, आशुलिपिक
राजसं., क्षेत्रीय केन्द्र पटना

मानव जीवन का मुख्य उद्देश्य

परमपिता परमात्मा की प्राप्ति करना तथा त्रय ताप दुःख से निवृत्ति पाना है। इस संसार में सभी मानव काम करके अपना जीवकोपार्जन तो करते हैं लेकिन परमात्मा की प्राप्ति कैसे होगी इसकी योग युक्ति का प्रयास लाखों में से कोई एक व्यक्ति ही करता है। समस्त मानव रात-दिन यही सोचते हैं कि मैं अधिक से अधिक काम करके धन इकट्ठा कर लूँ ताकि शांति मिले, लेकिन शांति नहीं मिलती।

हम इस शरीर को स्वस्थ रखने के लिए अच्छा भोजन करते हैं तथा अच्छे वस्त्र धारण करते हैं और सोचते हैं कि इस शरीर को कोई दुःख या कष्ट नहीं हो, जब हमारे पाँचों ज्ञानेन्द्रियों में झगड़ा शुरू हुआ तब आँख, कान, नाक, जिभा तथा त्वचा सभी ने यही कहा कि मैं न रहूंगी तो मनुष्य जीवित नहीं रहेगा, मर जाएगा। लेकिन जब पाँचों ज्ञानेन्द्रियों को निकाल लिया गया तब पता चला कि फिर भी मानव जीवित है पता चलता है कि शरीर में एक तत्व है जिसका नाम है आत्मा और यही आत्मा हमारे मन के द्वारा शरीर रूपी रथ का संचालन कर रही है, जब यह आत्मा निकल जाती है तो इस शरीर को एक पल भी रखना उचित नहीं समझा जाता और तुरन्त ही इतने अच्छे व सुन्दर शरीर को जला तथा दफनाया जाता है। लेकिन नाश सिर्फ हमारे शरीर का होता है हमारी आत्मा का नहीं। आत्मा तो अमर है। लेकिन सभी लोग इस शरीर को अपना मान बैठे हैं लेकिन यह शरीर अपना घर नहीं है। यह सृष्टि एक पाद में है बाकी तीन पाद अमृतमय सत्ता है और उन्हीं तीन अमृतमय पादों में इस आत्मा का भी निज घर है जहाँ परमात्मा वास करती है और वहाँ पर आत्मा उस आनन्द को भोगे हुए है। उसी आनन्द की खोज में मनुष्य आज इधर-उधर अनेकों मन्दिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों तथा चर्चों में व्रत में उपवास में आनन्द को खोज रहा है कि शांति मिले लेकिन शांति नहीं मिलती क्योंकि हमारे अन्दर जो आत्मा है, उसके पास मात्र इच्छा, गुण, तथा प्रयत्न मौजूद है और आनन्द जो है वह परमात्मा ने अपने पास रख लिया है और जब इस आनन्द की प्राप्ति होती है तभी शांति मिलती है।

मानव के शरीर में 72 करोड़ नाडियाँ हैं जिसमें तीन नाडियाँ मुख्य हैं, इंगला, पिंगला, सुषमना जिसमें इंगला, पिंगला नाडी खुली हुई हैं और सुषमना नाडी बन्द है और जब हम ब्रह्मविद्या ज्ञान को लेकर साधना करते हैं तब गुरु की कृपा से वह सुषमना अपना रास्ता छोड़ती है, उस समय पूरे शरीर में कंपन तथा थर्राहट होती है जिसको प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। मकर तार डोरि है उस डोरि को ब्रह्मरन्ध्र कहते हैं और उस ब्रह्मरन्ध्र को सुषमना साढ़े तीन हाथ फन मान कर उसको बंद किए हुए है। जब वह ब्रह्मरन्ध्र खुलती है तब हमारी चेतना जिसका मुख नीचे यानि अर्ध की ओर रहती है वह ऊपर यानि उर्ध्व की ओर हो जाती है और मानव के शरीर में आठ चक्र हैं मूलाधर, स्वाधिष्ठान, मानिपूरक, अनाहत विशुद्ध ब्रह्मरन्ध्राख्य, आज्ञा और सहस्रत्रार यह आठों चक्र अल्प अवधि की साधना में कमल की तरह खिल जाते हैं।

कुछ दिन पहले जिनेवा मे छः हजार वैज्ञानिकों ने मिलकर बिग बैंग का प्रयोग किया कि इस सृष्टि का निर्माण कैसे हुआ और सृष्टि में कंपन है तो कंपन कहाँ से हो रहा है लेकिन वैज्ञानिक इस रहस्य को मात्र 5 प्रतिशत ही हासिल कर पाए । लेकिन ब्रह्मविद्या के सदगुरु अपने स्वर्वेद के माध्यम से बतलाते हैं जो अध्यात्म जगत में पूरे विश्व में सबसे उच्च कोटि के सद्-ग्रन्थ है । वह कहते हैं कि इस ब्रह्मान्ड को मैं विस्तार रूप से जानता हूँ।

पूर्ण रूप में जानता, ब्रह्मचक्र विस्तार ।
ब्रह्मविद्या वह तत्त्व है, सदगुरु दया अपार ॥

आत्मा की छः अवस्थाएँ होती है

इन्हें जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरिया, तुरियातीत और आप्त कहते हैं । जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति प्राकृतिक अवस्थाएँ हैं जो सबको स्वाभाविक रूप से प्राप्त होती है । जाग्रतावस्था स्थूल शरीर में, स्वप्नावस्था सूक्ष्म शरीर में तथा सुषुप्ति अवस्था कारण शरीर में मिलती है शेष तीन अवस्थाएँ-तुरिया, तुरियातीत और आप्त योग साधन से प्राप्त होती हैं । तुरिया अवस्था वह है जिस काल में आत्मा प्रकृति का सम्बन्ध छोड़ने लगता है । तुरियातीत अवस्था जिस समय ब्रह्म को आनन्द गुण जीव को प्राप्त होने और दोनों का सम्बन्ध जुटने लगता है । जब आत्मा ब्रह्माधार पर स्थित हो चेतन परमानन्द का उपभोग करने लगता है उस अवस्था को आप्त अवस्था कहते हैं । तुरिया में महाकारण देह, तुरियातीत में कैवल्य देह और आप्त अवस्था में हंस देह प्राप्त होती है ।

आज संसार में सभी मानव शांति की खोज में उधर-उधर भटक रहे हैं लेकिन शांति नहीं मिलती, क्योंकि हमारी आत्मा के पास आनन्द नहीं है आनन्द तो परमात्मा के पास है और जब ब्रह्मविद्या का ज्ञान लेकर साधना के तुरियातीत अवस्था को प्राप्त करता है उस समय आत्मा पूर्णरूप से परमात्मा में लीन होकर उस आनन्द का रसास्वादन करने लगती है और आत्मा ब्रह्म स्वरूप हो जाती है ।

अब सवाल है कि परमात्मा की प्राप्ति कैसे हो, तो परमात्मा की खोज हमारे शरीर, मन तथा वाणी से नहीं हो सकती, क्योंकि इन तीनों की पहुँच प्रकृति तक सीमित है और परमात्मा प्रकृति के पार है । योग जो होता है सजातिय होता है द्विजातिय नहीं होता है । परमात्मा तो चेतन सत्ता है और हमारे शरीर में चेतन एक मात्र आत्मा है और आत्मा को धरातल से जब हम खोजेंगे तब परमात्मा की प्राप्ति हो जाएगी ।

लेकिन परमात्मा की खोज करने में सबसे बड़ी बाधा मन है क्योंकि हमारे मन की गति हवा की गति से भी ज्यादा है । हमारा मन हमारी आत्मा की शक्ति जिसको सूरति के नाम से जानते हैं, उसे लेकर बाहर अत्र तत्र अनेकों प्रकार के विषयों में फंसा रहता है और क्षणभर में सुदूर देशों में चला जाता है और जब तक हमारा मन रूकता नहीं है तब तक हमें परमात्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती है ।

आज विश्व में एक ऐसा सद्-ग्रन्थ है जिसके मुकाबले इस संसार में और कोई दूसरा सद्-ग्रन्थ नहीं है जिसका नाम है स्वर्वेद । इस स्वर्वेद के रचयिता ब्रह्मविद्या के सदगुरु जो विश्व में एक समय में एक ही होते हैं उन्होंने 17 वर्षों की कठिन साधना करने के उपरान्त शून्य शिखर हिमालय

की कन्दरा में नित्य अनादी सदगुरु के समक्ष स्वर्वेद की रचना की जिसमें कुल 3600 दोहें हैं, उस स्वर्वेद की वाणी कहती है ।

इस तन में मन कहा बसे, निकस जाए किस ठौर ।
गुरु गम हो तो परख लो नहीं तो गुरु करों और ॥

तो सबसे पहले मन को रोकना होगा जहाँ से उत्पत्ति हुई है उसी कारण में ले जाकर लय कर देना होगा, तब हम ईश्वर को प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा नहीं प्राप्त कर सकते हैं । इसके लिए सभी मानव जाति को ब्रह्मविद्या के सदगुरु को खोज कर ब्रह्मज्ञान लेना होगा और उनके आज्ञा में रह कर साधना करनी होगी । तब ईश्वर की प्राप्ति तथा परमानन्द की उपलब्धि होगी । जब परमानन्द की उपलब्धि हो जाएगी तब इस संसार में कोई भी चीज जानना बाकी नहीं रह जाएगी । मानव ब्रह्मज्ञानी बन जायेगा।
